

E-Learning Study Material

BY- Prof. CDR. JYADWENDRA SINGH

MAHARAJA COLLEGE, ARA

VK S UNIVERSITY ARA BIHAR

B.A. Economics Hons. First Year First Paper

~~Q. Explain~~

Marginal Productivity theory of Interest

Q- उत्पाद की सीमा की उच्चतम बिंदु की
जालानामक उत्पाद पर लागू की

(This theory of Interest was expounded by J.B. Clark and F.H. Knight. Further Marshall, J.B. Say, von-Thunen supported this theory. *

According to this theory interest arises on account of the productivity of capital.)

MARGINAL PRODUCTIVITY THEORY

OF INTEREST - 0 प्राज का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की 0 पाठना :-

0 प्राज का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त सबसे पुराना सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के प्रमुख लक्ष्यक मालथस (Malthus) कैरी (Carey), जे. बी. से (J. B. Say) तथा वॉन थुनन (Von Thunen) हैं।

विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रथमदृष्टि किपा गया है कि पूँजी में 0 उत्पादक क्षमता होती है। अपनी उत्पादक क्षमता के आकार पर ही पूँजी में 0 प्राज उत्पादन करने की क्षमता होती है।

उत्पत्ति के अन्य कारकों की तरह पूँजी में 0 उत्पत्ति द्वारा निष्पन्न लागू होता है। ज्यों-ज्यों पूँजी की रकमों का उपयोग निरन्तर बढ़ाया जाता है त्यों-त्यों पूँजी की सीमान्त उत्पादकता घटती जाती है। दीर्घकाल में 0 प्राज दर की प्रवृत्ति पूँजी की सीमान्त उत्पादकता के बराबर होती है। यदि 0 प्राज दर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता से अधिक है तो पूँजी की माँग कम की जायगी। फलतः पूँजी की सीमान्त उत्पादकता बढ़ेगी और वह बढ़कर 0 प्राज दर के बराबर हो जायगी। इसके विपरीत यदि 0 प्राज दर पूँजी की सीमान्त उत्पादकता से कम है, तो

पूँजी की माँग बढ़ेगी, क्योंकि पूँजी के अधिक उपयोग से उसकी सीमान्त उत्पादकता ~~अब~~ घटेगी और अन्य में वह ~~अपना~~ दर के बराबर हो जाएगी।

अतः लम्बेप में दीर्घकाल में ~~अपना~~ दर की प्रवृत्ति पूँजी की सीमान्त उत्पादकता के बराबर रहने की होती है।

इस सिद्धान्त की विशेषता - सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की प्रमुख विशेषता यह है कि ~~अपना~~ दर (Rate of Interest) कभी भी ऋणात्मक (negative) नहीं हो सकती है।

लेकिन प्रथम बार फॉक्सवेल (Foxwell)

तथा उसके बाद मारशल ने यह बताया कि ~~अपना~~ दर ऋणात्मक हो सकती है। उनका कहना है कि जब ~~अपना~~ दर अपने धन की अपने पास रखने की अपेक्षा बैंक में रखना अधिक सुरक्षित लगना है तब ~~अपना~~ दर ऋणात्मक (negative) होगी।

दुली प्रकार मंदी (depression) के दिनों में जब पूँजी की माँग बहुत कम होती है और उत्पादन कार्य प्रायः बन्द हो जाता है या पूँजीपति या उद्योगपति विनिर्योग करना बन्द कर देते हैं; तब ~~अपना~~ दर शून्य होगी। रत प्रकार दलों दशाओं में ~~अपना~~ दर शून्य तथा ऋणात्मक हो सकती है।

अतः उपरोक्त बातों के सम्बन्ध में सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त एक नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है और यह दिखाने की कोशिश करता

कि ०प्राप्त की दर स्वरूपालम्बक नहीं हो सकती है।
 ०प्राप्त - दर हमेशा सीमान्त उत्पादकता के बराबर
 होती है। अतः वह स्वरूपालम्बक तभी हो सकती है
 जबकि उत्पादकता नकारात्मक हो। किन्तु कोई भी
 किन्तु कोई भी विवेकशील उत्पादक पूँजी की सीमान्त
 उत्पादकता को नकारात्मक (negative) नहीं होना
 देगा। चूंकि सीमान्त उत्पादकता सदैव धनात्मक
 (Positive) होती है, इसलिए ०प्राप्त - दर भी धनात्मक
 (Positive) होगी।

अतः इस सिद्धान्त के अनुसार ०प्राप्तियों
 की धन सुरक्षा के लिए बैंक को कुद देना है वह लक्ष्य
 मायने में ०प्राप्त नहीं है। यह राशि तो केवल धन
 को सुरक्षित रखने के लिए बैंक को दी जाती है
 न कि बैंक को ०प्राप्त के रूप में कुद दिया जाता
 है। आर्थिक दृष्टि से ०प्राप्त कभी भी स्वरूपालम्बक
 नहीं होगा।

(Thus By employin Capital the
 entrepreneur obtains higher
 production, he ought to a part of
 this additional Production to the
 owner of Capital in the Form of
 Interest. The theory implies that
 Capital is demanded because it
 productive and because is productive
 its price, i.e. interest must be
 Paid.)